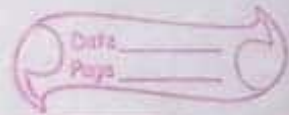


# Geography

11



"इसने संप्रदाय को नेताओं को लोगों का  
युवा पुत्रादीय बना दिया। न्याय पुत्रादीय  
प्रणाली स्थापित की गई। तब से कार  
भी मुकदमा पुलिस को नहीं दिया जाता।  
22 मार्च 1957 को काशी से एक  
विद्यार्थी श्री कर्माकर का निर्माण कर्म गौव  
का संसाधना के उद्योग से किया गया।  
उसके लिए कोई भी दान नहीं लिया  
गया। आवश्यकता पड़ने पर धन का  
कर्म लेकर बर्फ में वापस कर दिया  
गया। गौव वालों को इस आत्मनिश्चय  
से वाप महसूस हुआ। वाप का अनुकरण  
से ग्राम की हिलेदारा को एक नई  
प्रणाली का विकास हुआ। लोग कृषि  
कार्य में स्वच्छ से एक-दूसरे को  
मदद करने लगे। बुमिहान ग्राम का  
शासनार मित ग्राम। आपकाल ग्राम  
अपने निर्मापवती ग्रामों में उनका लिए  
ग्राम स्वरोद्वेग को भुजना बनाते हैं।  
वर्तमान में जन सभायुक्त मातृ में  
स्वच्छ फल - फल रहा है। उद्योग उद्योग  
और कालुनाशका का उद्योग आर्थिक  
है रहा है, नेता के बाकि कार्य जारी  
रखने का सोचता है। संबंध में प्रश्न  
उठा है। उनका शब्द में इसका  
उत्तर मिलता है। "शासन का विकास

5) शालीगंज सिद्धि, अहमदनगर, महाराष्ट्र में जन-संभार विकास को विस्तारित करें ?

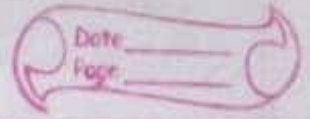
उ०. > महाराष्ट्र में, अहमदनगर जिले में शालीगंज सिद्धि एक छोटा-सा गाँव है। यह प्रदेश में जन-संभार विकास का एक उदाहरण है। 1975 में, यह गाँव जल और शराब के बर-कानूनी व्यापार जाल में जकड़ा हुआ था। उस समय गाँव में परिवर्तन आया। प्रथम सेना का एक सेनानिवृत्त, कामचारा उस गाँव में बस गया और जन-संभार विकास का कार्य आरंभ किया। उसने गाँव वालों को परिवार नियोजन और स्वच्छता, स्वस्थ चराई, वृक्षों को काटने से बचाने और मद्य नियन्त्रण के लिए पहिचान प्राम आर्थिक सहायता के लिए सरकार भर काम से काम निर्भर रहने के लिए आवश्यक था। उस सहस्रवर्षीय का कथानुसार, "इसने परिवार योजनाओं की लीगत को समाप्त कर दिया।" जो इसी गाँव को बाहर काम कर रहे थे, उन्होंने भी प्रति वर्ष एक महान का वतन कर विकास में सहयोग दिया।

गाँव में अंतःस्त्रापी तामाव के निर्माण के साथ काम शुरू हुआ। 1975 ई. में तामाव में यानी नही एक एकका। तदवध को द्विवारे रिल रही थी। तदवध को संपादक को सय से मरम्मत करने को बिहू लोवा को एक किया गया। लोवा को माह में सहनी वारु वामी में इसके नीचे सात कुओ में कुत भर गया। लोवा में अयने नता और उलक पिचारे में अयना विश्वास दिखाया। नोपुवाना का एक समूह बनाया गया जिस 'तरुण मंडल' कहा गया। समूह ने इंडन प्रथा को लातिवार और हुआद्युत पर प्रतिवध लगाने का काम किया। शराब और आसवन इकाई परम कर की वार और मध्य निर्मवध लोवा करु किया गया। थानु पर चारु इन पर जोर कर खुनी चारु पर पूरा तरह प्रतिवध लगा दिया गया। वरुन जल फसल जल - बाने की खेती पर प्रतिवध लगा दिया गया। कमु माना को आवरभकता वाहु फसलो जल - कामे तिलहन और कुह नगी फसलो को प्रोत्साहन किया गया।

वि. स. स. के सारे युवा सपसम्मत के आधार पर शुरू कर दि

# Geography

(12)



की प्रक्रिया एक आदर्श गाँव बनने  
तक नहीं पहुँचती। " वह नए समय  
के साथ गाँव विकास के नए स्तरों  
की ओर अग्रसर है। आवेष्ट में  
सामग्री है। का एक अलग माडल  
प्रस्तुत कर सकता है।

# Geography

8

Date \_\_\_\_\_  
Page \_\_\_\_\_

जल संचयन के स्रोत दो प्रकार के हैं-

- 1) धरातलीय जल संचयन — देश में नदियों, झीलों, तालाबों, जलाशयों के कवच में मिलने वाला जल धरातलीय जल कहलाता है। डॉ. के. एल. राव के अनुसार भारत में नदियों का अनुमानित औसत वार्षिक प्रवाह 1869 अरब घन मीटर है परंतु स्वाभाविक बाधाओं

3. सड़कों पर जल फैलाव की रोकना ,
4. भूमि जल में दूषित करना तथा जलस्तर की ऊँचा उठाना ,
5. भूमि जल दूषण को रोकना ,
6. भूमि जल की गुणवत्ता को सुधारना
7. मृदा अपरदन को कम करना ,
8. ग्रीष्म ऋतु और सूखे के समय जल की धरैलु आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करना ।

ऐसी अनेक कम लागत वाली तकनीकी उपलब्ध हैं, जो भूमि जल के भंडारों के पुनर्भरण में सहायता कर सकती हैं। कुछ महत्वपूर्ण तकनीकें :  
जैसे - छत के वर्षा जल का संग्रहण , दूर दूरियों का पुनर्भरण , हैंड पंपों का पुनर्भरण , सि. रिसाव गड्ढों का निर्माण , खेतों के चारों ओर खाकियाँ और छोटी - छोटी खाकियाँ पर बांधकारों और रोक बाँध बनाना विशेष उल्लेखनीय हैं। इसमें से कुछ तकनीकों को

2) भारत में जल कहाँ - कहाँ से प्राप्त होता है

जल के स्रोत - भारत में पर्याप्त मात्रा में जल संसाधन उपलब्ध हैं देश में धरातलीय जल और स्रोत : प्रति बर्ष भूमि जल की वार्षिक उपलब्धता लगभग 1869 अरब घन मीटर है देश में उपयोगी जल संसाधन 1123 अरब घनमीटर है, जिसमें से 6900 अरब घन मीटर धरातलीय जल और 433 अरब घन मीटर सतही भूमि जल संसाधन है देश के